श्री शिव चालीसा

शिव स्तुति व शिवाष्टक तथा

शिवजी की आरती

मूल्य : 2.00

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

समुद्र मंथन से निकले हलाहल का पान करने पर भगवान शिव ही नीलकण्ठ कहलाये। क्योंकि संसार के अनिष्टों अर्थात विष का विनाश उन्होंने भोले भाव से किया और भोलेनाथ बन गये। तात्पर्य ये है कि वह अपने भक्तों की किंचित भक्ति से भी प्रसन्न हो जाते हैं। नीललोहित, नीलवर्ण शंकरजी की अनुकम्पा पान के लिये इस नीले रंग से छपे 'शिव चालीसा' का तान्त्रिक प्रभाव कई गुना अधिक है क्योंकि समस्त तन्त्रों के जन्मदाता और तान्त्रिक सम्राट तो शिव स्वयं हैं।

अथ शिव चालीसा

श्री गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान॥

जय गिरिजापति दीन दयाला।
सदा करत संतन प्रतिपाला।

भाल चन्द्रमा सोहत नीके।

कानन कुण्डल नागफनी के।।
अङ्ग गौर शिर गङ्ग बहाये।
मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे।
छवि को देख नाग मुनि मोहे।।

मैना मातु की है दुलारी।
बाम अङ्ग सोहत छवि न्यारी॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दि गणेश सोहैं तहँ कैसे।
सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ।
या छवि को कहि जात न काऊ।।

देवन जबहीं जाय पुकारा।

तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा ।।
किया उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ।।
तुरत -षडानन आप पठायउ ।
लव निमेष महँ मारि गिरायउ ।।

आप जलन्धर असुर संहारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसारा ।।

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहिं कृपा कर लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी।
पूरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं।
सेवक स्तुति करत सदाहीं।।

वेद नाम महिमा तव गाई।

तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा ।।
किया उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ।।
तुरत षडानन आप पठायउ ।
लव निमेष महँ मारि गिरायउ ।।
आप जलन्धर असुर संहारा ।

सुयश तुम्हार विदित संसारा ।।

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।
सबहिं कृपा कर लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी।
पूरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं।
सेवक स्तुति करत सदाहीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई।

अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगट उदधि मन्थन में ज्वाला।
जरत सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई।
नीलकंठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा।

जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।

सहस कमल में हो रहे धारी।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई।
कमल नयन पूजन चहँ सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शङ्कर।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर।।

जय जय जय अनन्त अविनाशी।

करत कृपा सब के घटवासी ।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै ।
भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै ।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।
यहि अवसर मोहि आन उबारो ।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।

संकट से मोहि आन उबारो ।।

मातु पिता भ्राता .सब होई।
संकंट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी।
आय हरहु अब संकट भारी।।
धन निरधन को देत सदाहीं।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं।।

अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी।

क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।।
शङ्कर हो संकट के नाशन।
मंगल कारण विघ्न विनाशन।।
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं।
नारद शारद शीश नवावैं।।

नमो नमो जय नमो शिवाय।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय।।

जो यह पाठ करे मन लाई।
ता पार होत हैं शम्भु सहाई।।
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी।
पाठ करे सो पावनहारी।।
पुत्र हीन कर इच्छा कोई।
निश्चय शिव प्रसन्न तेहि होई।।

पण्डित त्रयोदशी को लावे।

ध्यान पूर्वक होम करावे ।।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा ।
तन नहीं ताके रहे क्लेशा ।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे ।
शंकर सन्मुख पाठ सुनावे ।।
जन्म जन्म के पाप नसावे ।

अन्तवास शिवपुर में पावें ।।

कहत अयोध्या आस तुम्हारी।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी ।।

॥ दोहा ॥

नित नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीस ।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश ।।
मग्सर छटि हेमन्त ऋतु, संवत् चौंसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण ।।

।। अथ शिव स्तुति ।।

श्री गिरिजापति वंदिकर, चरण मध्य शिर नाय ।
कहत अयोध्यादास तुम, मोपर होहु सहाय ।।

नन्दी की सवारी नाग अंगीकार धारी,
नितसन्त सुखकारी नीलकंठ त्रिपुरारी हैं ।
गले में मुंडमाला धारी सिर सोहे जटाधारी,
बाम अंग में बिहारी गिरिराज सुतवारी हैं ।

दानी देख भारी शेष शारदा पुकारी,
काशीपति मदनारी कर शूल चक्रधारी हैं।
कला उजियारी लख देव सो निहारी,
यश गावें वेदचारी सो हमारी रखवारी हैं।
शम्भु बैठें हैं विशाला भंग पीवे सो निराला,
नित रहै मतवाला अहि अंग पै चढ़ाये हैं।

गल सोहे मुण्डमाला कर डमरू विशाला,
अरु ओढ़े मृगछाला भस्म अंग में लगाये हैं

संग सुरभी सुतशाला शीश जटा प्रतिपाला,
मृत्यु हरैं अकाला शीश जटा को बढ़ाए हैं।
कहै रामलाल मोहि करो तुम निहाल अब,
गिरिजापति कैलाश जैसे काम को जलाये हैं।
मारा है जलंधर और त्रिपुर को संहारा,
जिन जारा है काम जाके शीश गंगधारा है।

धारा है अपार जासु महिमा है तीन लोक,
भाल मैंहै इंदु जाके सुषमा की सारा है।

सारा है बात सब खायो हलाहल जानि,
भक्त के अधारा जाहि वेदन उचारा है।
चारों हैं भाग जाके द्वार हैं गिरीश कन्या,
कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है।
अष्ट गुरु ज्ञानी जाके मुख वेदबानी,
सोहै भवन में भवानी सुख सम्पत्ति लहा करें।
मुण्डन की माला जाके चन्द्रमा ललाट सोहै,
दासन के दास जाके दारिद दहा करै।

चारों द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी,
कहत कवि अनंदी नर नाहक हा हा करें।
जगत रिसाय यमराज को कहा बसाय,
शंकर सहाय तो भयंकर कहा करै।
सवैया-गौर श्याम में गौरी विराजत,
मोर जटा सिर मोहन जाके।

नागन को उपवीत लसै कहै अयोध्या,
शशि भाल में वाके।

दान करे पल में फल चारि,
और टारत अंक लिखे विधना के।
शंकर नाम निःशंक सदा ही
भरोसे रहैं निसिवासर ताके।

मगसर मास हेमंत ऋतु, छठ दिन है शुभ बुद्ध।
कहत अयोध्या दास तुम, शिव के विनयसमुद्ध।।

।। इति शिव स्तुति समाप्त ।।

★ श्री शिवाष्टक ★

आदि अनादि अनन्त,
अखण्ड अभेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेश को,
जोगि जती-मुनि ध्यान न पावैं॥

आगम - निगम - पुरान सबैं,
इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।

बड़भागी नर-नारि सोई,
जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावैं ।।
सृजन, सुपालन लय लीलाहित,
जो विधि-हररूप बनावें ।
एकहि आप विचित्र,
अनेक सुबेस बनाईकें लीला रचावें ।।

सुन्दर सृष्टि सुपालन करि,
जग पुनि बन काल जु खाय पचावें ।

बड़भागी नर-नारि सोई,
जो साँब-सदाशिव को नित ध्यावैं।।
अगुन अनीह अनामय,
अज अविकार सहज निजरूप धरावैं।
परम सुरम्यबसन-आभूषन,
सजि मुनि मोहन रूप करावैं।।
ललित ललाट बाल बिधु बिलसै,
रतन-हार उर पै लहरावैं।

बड़भागी नरनारि सोई जो,
साँब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
अंग विभूति रमाय मसान की,
विषमय भुजंगनि कौ लपटावैं।
नर-कपाल कर, मुण्डमाल गल,
भालु-चर्म सब अंग उढ़ावैं।।
घोर दिगम्बर, लोचन तीन,
भयानक देखि कै सब थर्रावैं।

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
सुनतहि दीन की दीन पुकार,
दयानिधि आप उबारन आवैं ।
पहुँच तहाँ अविलम्ब,
सुदारुन-मृत्यु को मर्म विदारि भगावैं ।।
मुनि मृकंडु-सुत की कथा,

सुचि अजहूं, विज्ञ जन गाइ सुनावैं ।

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब-सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।
चाउरचारि जो फूल धतूर के,
बेल के पात, औ पानी चढ़ावैं।
गाल बजाय कै बोल जो,
'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं।।
तिनहिं महाफलदेयँ सत्यशिव,
सहजहि मुक्ति-भुक्ति सो पावैं।

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।
बिनसि दोष दुःख दुरित दैन्य,
दारिद्र्यं नित्यसुखशांति मिलावैं।
आसुतोष हर पाप-ताप सब,
निरमल बुद्धिचित्त बकसावैं ।।
[illegible] कांति [illegible],
भव जिन भवन भव्य बुलवावैं।

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं॥
औढ़रदानील, उदार अपार जु,
नैक-सी सेवा तें ढुरि जावैं।
दमन अशांति, समन संकट,
बिरद विचार जनहिं अपनावैं॥

ऐसे कृपालु कृपानिधि देव कों,
क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं।

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं।।

त्रिगुण आरती शिवजी की

जै शिव ओंकारा हरशिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी धारा।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै

हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजै।

समुद्र मंथन से निकले हलाहल का पान करने पर भगवान शिव ही नीलकण्ठ कहलाये। क्योंकि संसार के अनिष्टों अर्थात विष का विनाश उन्होंने भोले भाव से किया और भोलेनाथ बन गये। तात्पर्य ये है कि वह अपने भक्तों की किंचित भक्ति से भी प्रसन्न हो जाते हैं। नीललोहित, नीलवर्ण शंकरजी की अनुकम्पा पान के लिये इस नील रंग से छपे 'शिव चालीसा' का तान्त्रिक प्रभाव कई गुना अधिक है क्योंकि समस्त तन्त्रों के जन्मदाता और तान्त्रिक सम्राट तो शिव स्वयं

बड़भागी, नरनारि सोई जो,
साँब सदाशिव कौ नित ध्यावैं ।।

त्रिगुण आरती शिवजी की

जै शिव ओंकारा हरशिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी धारा।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै

हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजै।

समुद्र मंथन से निकले हलाहल का पान करने पर भगवान शिव ही नीलकण्ठ कहलाये। क्योंकि संसार के अनिष्टों अर्थात विष का विनाश उन्होंने भोले भाव से किया और भोलेनाथ बन गये। तात्पर्य ये है कि वह अपने भक्तों की किंचित भक्ति से भी प्रसन्न हो जाते हैं। नीललोहित, नीलवर्ण शंकरजी की अनुकम्पा पाने के लिये इस नीले रंग से छपे 'शिव चालीसा' का तान्त्रिक प्रभाव कई गुना अधिक है क्योंकि समस्त तन्त्रों के जन्मदाता और तान्त्रिक सम्राट तो शिव स्वयं हैं।

श्री शिव चालीसा

शिव स्तुति व शिवाष्टक तथा
शिवजी की आरती

मूल्य : 2.00

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार